www.Instarnews.com

खबर जो असर करे

एल एन स्टार

LNCT समूह का प्रकाशन

भोपाल, इंदौर से एक साथ प्रकाशित

संस्थापक : स्व. सुरेश कुमार चौकसे | वर्ष 3, अंक 60 | भोपाल, सोमवार 19 जून 2017 | मूल्य 3 • पृष्ठ 12 | आर.एन.आई. रजि. क्रमांक MPHIN/2015/64419

सेक्युलर दलों का हल्ला बोल | संवाद 4

First कॉलम

■ प्रकाश भटनागर

दिग्विजय की नर्मदा यात्रा के मायने...

यह भाजपा के लिए इस बार चिंता की बात होना चाहिए। दिग्विजय सिंह का चेहरा इस बार भाजपा के लिए मददगार साबित नहीं होगा। मिस्टर बंटाढार का दिग्विजय सिंह पर लगा तमगा भाजपा की साढ़े तेरह साल की सत्ता के बाद बदलता नजर आ रहा है। हाल की घटनाएं और शिवराज सरकार की ताजा गलतियां ये बता रही हैं। दिग्विजय सिंह अब प्रायश्चित के मूड़ में आ गए हैं। 2003 में कांग्रेस की शर्मनाक हार के वे जिम्मेदार थे। पर दिग्विजय सिंह जानते हैं कि 2008 और 2013 में कांग्रेस की हार और भाजपा की जीत का कारण वे अकेले नहीं थे। हार के जिम्मेदार कांग्रेसियों को भी ये समझ में आ रहा है। इसलिए कांग्रेसी नेताओं में एकता की तेज होती आवाजें उनकी मजबूरी हैं। कांग्रेस के लिए अच्छा यह है कि पिछले साढ़े तेरह साल में हर स्तर के चुनावों में लगातार हार के बावजूद भी प्रदेश में भाजपा के विकल्प के तौर पर कांग्रेस के अलावा कुछ नहीं है।

इसलिए अगर दिग्विजय सिंह ने नर्मदा की परिक्रमा का इरादा किया है तो कांग्रेस के लिए फायदे का सौदा होगा। दिग्विजय सिंह के नजदीकी सूत्र इसे उनकी धार्मिक यात्रा बता रहे हैं। इस बारे में दिग्विजय सिंह ने कांग्रेसाध्यक्ष सोनिया गांधी को कोई चिट्ठी तो नहीं लिखी है लेकिन उनसे मौखिक रूप से इस बारे में बातचीत कर छह महीने के लिए छुट्टी मांगी है। दिग्विजय सिंह का इरादा दशहरे और दीपावली के बीच किसी समय नर्मदा परिक्रमा शुरू करने का है। दिग्विजय सिंह संघ, भाजपा और भगवा आतंकवाद पर चाहे जो बोलते रहे हों लेकिन वे शुद्ध सनातनी हैं। इसमें किसी को शक नहीं होना चाहिए। दिग्गी राजा जब मुख्यमंत्री थे, तब भी वे बिना किसी तामझाम के मथुरा में नंगे पैर गोवर्धन परिक्रमा करने हर साल जाया करते थे। उनके साधु संतों से भी किसी भाजपाई की तुलना में कम संबंध नहीं रहे हैं।

दिग्विजय सिंह एक पंथ, दो काज करने के तैयारी कर रहे हैं। नर्मदा परिक्रमा भी और राजनीति भी। दिग्विजय सिंह की यह नर्मदा परिक्रमा, शिवराज की सेवा यात्रा के प्रोपेगंडे से हटकर होगी। वे परम्परागत रूप से पैदल परिक्रमा करेंगे। यह छह महीने या इससे ज्यादा की भी हो सकती है। हां, इस दौरान यह जरूर होगा कि परिक्रमा के दौरान वे शिवराज सिंह की नर्मदा सेवा यात्रा का पोस्टमार्टम भी करते चलेंगे। नर्मदा सेवा यात्रा के दौरान शिवराज सिंह चौहान ने जो घोषणाएं की हैं, उन पर क्या अमल हो रहा है? नर्मदा किनारे के कितने शहरों में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट पर काम शुरू हुआ? नर्मदा किनारे लगाए जाने वाले लाखों करोड़ों पेड़ पौधों का हाल क्या है? नर्मदा में रेत खनन की स्थिति कैसी है? जाहिर है, दस साल मुख्यमंत्री रहा और कांग्रेस में नीचे तक कार्यकर्ताओं को जानने वाला शख्स जब जमीन पर आ रहा है तो वो कमजोर होती कांग्रेस में जान भी फूंक सकता है। नर्मदा की यह पूरी पट्टी वो क्षेत्र है, जहां कांग्रेस एक-डेढ़ दशक पहले तक मजबूत हुआ करती थी।

महाकौशल और निमाड़ कभी कांग्रेस के गढ़ हुआ करते थे। इन क्षेत्रों में आज जरूर भाजपा का कब्जा है लेकिन जाहिर है, कांग्रेस का आधार कमजोर नहीं है। दिग्विजय सिंह इसे मजबूती देने का काम कर सकते हैं। दिग्विजय सिंह के नजदीकी सूत्रों का कहना है कि वे इस यात्रा को पार्टी में सभी नेताओं की सहमति से ही करना चाहते हैं। जाहिर है दिग्विजय सिंह अपनी तरफ से वो डर खत्म करने की कोशिश में हैं कि इस यात्रा के पीछे उनका अपना कोई पर्सनल एजेंडा है। वैसे भी वे कांग्रेसियों को चेता रहे हैं कि पहले चुनाव जीत लो, मुख्यमंत्री तो पार्टी आलाकमान को ही तय करना है। कांग्रेस में हकीकत भी यही है। खलघाट में जिस तरह सिंधिया के नारे लगे, उसने इतना तो साफ कर ही दिया है कि कांग्रेसियों ने चुनाव लड़ने के लिए अपना कमांडर चुन लिया है।

दिग्विजय सिंह अगर नर्मदा परिक्रमा को अपने पुण्य प्रताप के लिए अध्यात्म से जोड़कर विशुद्ध धार्मिक यात्रा की तरह कर रहे हैं, तो कांग्रेस को इसका नुकसान होगा। चुनावी माहौल जब उफान पर होगा और कोशिश कांग्रेस को खड़ा करने की हो रही होगी, तब दिग्विजय सिंह का कांग्रेस के राजनीतिक परिदृश्य से छह महीने के लिए बाहर होना ही दिग्गी राजा की कांग्रेस को पलीता लगाने वाली राजनीति होगी। जाहिर है दिग्विजय सिंह भी इस वास्तविकता को जानते होंगे। जहां तक भाजपा का अब भी दिग्विजय सिंह के दस साल गिनाने का सवाल है तो उसके लिए अच्छा यही होगा कि वो अब अपने ही पन्द्रह सालों की चिंता करे। एक चेहरा और तेरह साल पर भी अब भाजपा को ही गौर करना है।

इंडोनेशिया ओपन जीतने वाले पहले भारतीय किदांबी श्रीकांत ने रचा इतिहास

जकार्ता। भारत के अग्रणी पुरुष बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत ने रविवार को इंडोनेशिया ओपन जीतकर इतिहास रच दिया है। श्रीकांत इस टूर्नामेंट को जीतने वाले पहले भारतीय पुरुष खिलाड़ी हैं। उन्होंने रविवार को खेले गए फाइनल मैच में जापान के काजुमासा साकाई को मात देकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की। श्रीकांत ने 37 मिनट तक चले मुकाबले को 21-11, 21-19 से जीता। श्रीकांत ने शनिवार को विश्व के नंबर-1 खिलाड़ी दक्षिण कोरिया के सोन वान हो को हराते हुए फाइनल में प्रवेश किया था। वहीं काजूमासा साकाई ने भारत के ही प्रणॉय को मात देकर फाइनल में जगह बनाई थी।

24 वर्षीय श्रीकांत शुरू से ही पूरे रंग में दिखे और प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी पर पहले ही गेम में हावी हो गए। उन्होंने पहला गेम 21-11 से जीता। दूसरे गेम में साकाई ने वापसी करते हुए शुरुआत में बढ़त बना ली, एक वक्त वह 11-6 से आगे थे, लेकिन इसके बाद श्रीकांत ने जोरदार तरीके से आक्रमण शुरू किया और पहले तो बराबरी की और फिर 21-19 से मैच के साथ ही 1,000,000 अमेरिकी डॉलर का ईनाम अपने नाम कर लिया।

दुनिया के 22वें नंबर के खिलाड़ी श्रीकांत का यह दूसरा सुपर सीरीज प्रीमियर खिताब है। इससे पहले उन्होंने 2014 में चाइना ओपन पर कब्जा जमाया था। श्रीकांत के लिए यह चौथा सुपर सीरीज फाइनल था। 2015 में वह इंडिया ओपन जीत चुके हैं।

श्रीकांत ने शनिवार को विश्व के नंबर-1 खिलाड़ी दक्षिण कोरिया के सोन वान हो को हराते हुए फाइनल में प्रवेश किया। विश्व के 22वीं वरीयता प्राप्त श्रीकांत ने सोन को रोमांचक मुकाबले में 21-15, 14-21, 24-22 से मात दी थी। यह मैच एक घंटा 12 मिनट चला था। मैच के बाद श्रीकांत ने कहा था,अपने अभी तक के प्रदर्शन से बेहद खुश हूं। यह मैच काफी मुश्किल रहा। फॉर्म में चल रहे खिलाड़ी को हराना हमेशा मुश्किल होता है। अब आगे भी यही फॉर्म जारी रखने का प्रयास करूंगा।'

दूसरी ओर, साकाई ने भारत के ही एचएस प्रणॉय को मात देकर फाइनल में प्रवेश किया था। साकाई ने प्रणॉय को कठिन मुकाबले में 21-17, 26-28, 18-21 से हराया था। प्रणॉय ने दो उलटफेर के बाद सेमीफाइलन में जगह बनाई थी। दूसरे दौर में जहां उन्होंने छह बार के चैंपियन ली चोंग वेई को हराया था वहीं क्वॉर्टर फाइनल में उन्होंने मौजूदा ओलंपिक, विश्व और एशियाई चैंपियन चीन के चेन लोंग को परास्त किया था। श्रीकांत और विश्व के 47वें वरीयता प्राप्त साकाई के बीच यह अब तक की पहली भिड़ंत थी।

स्विस बैंक में भारतीयों का कम पैसा

नई दिल्ली। अक्सर भारतीय राजनेताओं के स्विस बैंक में पैसा जमा होने के आरोप लगते रहते हैं। लेकिन हैरत में डालने वाला खुलासा हुआ है कि अन्य कई देशों के मुकाबले भारत के लोगों का स्विस बैंक में काफी कम पैसा है। यह कहना है स्विट्जरलैंड के प्राइवेट बैंकर्स के एक ग्रुप का। उनका मानना है कि स्विस बैंक में भारतीयों की अपेक्षा सिंगापुर और हॉन्गकॉन्ग जैसे फाइनेंशल हब का ज्यादा पैसा है। मौजूद ताजा आंकड़ों की मानें तो स्विस बैंक में भारतीयों का सिर्फ 1.2 बिलियन फ्रैंक (लगभग 8,392 करोड़ रुपये) है। सह आंकड़ा 2015 के आखिर का है। हालांकि अन्य ग्लोबल हब को लेकर ऐसा कोई आंकड़ा मौजूद नहीं है।

बता दें कि पिछले दिनों ही स्विट्जरलैंड ने एईओआई (ऑटोमैटिक एक्सचेंट ऑफ इन्फर्मेशन) का वादा किया है। जिसके तहत संबंधित देश को उनके नागरिकों द्वारा जमा कराए गए धन की जानकारी स्वतः दी जाएगी। इस फैसले में भारत के साथ 40 अन्य देश भी शामिल होंगे। लेकिन जिनेवा स्थित एसोसिएशन ऑफ स्विस प्राइवेट बैंक ने कहा है कि उसे भारत को लेकर कोई विशेष चिंता नहीं है, जहां कानून का शासन उचित रूप से बरकरार रखा जा रहा है। एसोसिएशन के मैनेजर जैन लैंगो ने बताया कि स्विट्जरलैंड में रह रहे भारतीयों का पैसा काफी कम है, वहीं सिंगापुर और हॉन्गकॉन्ग इसमें कहीं ज्यादा आगे हैं।

राष्ट्रपति ने दो बलात्कारियों की क्षमा याचनाएं ठुकराई

नई दिल्ली: राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने अपना कार्यकाल पूरा करने से बस दो माह पहले मई के आखिरी हफ्ते में दो और क्षमायाचनाएं ठुकरा दी। एक क्षमायाचना चार साल की बच्ची के बलात्कार और हत्या के मामले से जुड़ी थी। इंदौर में 2012 में तीन पुरुषों ने इस जघन्य अपराध को अंजाम दिया था। दूसरी घटना पुणे की 2007 है जिसमें दो पुरुषों ने 22 साल की एक लड़की के साथ बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी थी। ये दोनों याचनाएं राष्ट्रपति सचिवालय को अप्रैल और मई माह में मिली थीं। दोषियों ने राष्ट्रपति से याचना की थी कि उनको सुनाई गईं सजाए मौत माफ कर दी जाएं। सुप्रीम कोर्ट इन सजाओं की पुष्टि कर चुका है। बलात्कार और हत्या के इंदौर के जघन्य मामले में अपराध के एक साल बाद ही शहर की एक अदालत ने जितेंद्र उर्फ जीतू, बाबू उर्फ केतन और सन्नी उर्फ देवेन्द्र को सजाए मौत सुना दी थी। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने 2014 में और सुप्रीम कोर्ट ने 6 जनवरी 2015 को सजाए मौत की पुष्टि कर दी थी। राष्ट्रपति भवन की एक विज्ञप्ति के अनुसार मुखर्जी ने 25 मई को उनकी क्षमायाचना खारिज कर दी। पुणे मामले में टैक्सी ड्राइवर पुरुषोत्तम दशरथ बोराटे और उसके सहयोगी प्रदीप यशवंत कोकाड़े ने महिला का बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी थी। महिला ने दफ्तर जाने के लिए टैक्सी ली थी। निचली अदालत ने दोनों को सजाए मौत सुनाई थी।

खराब प्रदर्शन वाले नपेंगे, सूची में आईएएस आईपीएस भी

अब 67 हजार कर्मचारी मोदी के निशाने पर

कुल 48.85 लाख केंद्रीय कर्मचारी

एजेंसी, नई दिल्ली

केंद्र सरकार 67 हजार से ज्यादा केंद्रीय कर्मचारियों के सर्विस रिकॉर्ड्स रिव्यू करने वाली है। इस लिस्ट में आईएएस और आईपीएस अफसर भी शामिल होंगे। सर्विस रिकार्ड्स को रिव्यू कर सरकार नॉन-परफॉर्म्र्स का पता लगाएगी। इसके पीछे सरकार का उद्देश्य सरकारी सेवाओं की डिलिवरी को बेहतर बनाना और प्रशासनिक स्तर सुधारना है। कार्मिक एवं प्रशिक्षण मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस रिव्यू के तहत कोड ऑफ कंडक्ट का पालन न करने वालों को दंड भी दिया जाएगा। उन्होंने कहा, सरकार 67 हजार केंद्रीय कर्मचारियों के सर्विस रिकाड्र्स को रिव्यू कर रही है ताकि नॉन-परफॉर्मेंस का पता लगाया जा सके।'

अधिकारी ने बताया कि कुल 67 हजार केंद्रीय कर्मचारियों में 25 हजार ग्रुप ए सर्विसेज के आईएएस, आईपीएम और आईआरएस अधिकारी हैं। न्यूज एजेंसी पीटीआई को केंद्रीय कार्मिक एवं प्रशिक्षण राज्यमंत्री जितेन्द्र सिंह ने बताया,एक तरफ सरकार की प्राथमिकता सेवाओं के पहुंच को समय से बढ़ाने की है वहीं सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस पॉलिसी बढ़ाना चाहती है। इससे ईमानदारी से काम करने वाले कर्मचारियों के लिए सही माहौल बनेगा।'

उन्होंने कहा, सरकार वर्कफोर्स की परफॉर्मेंस का समय-समय पर मूल्यांकन करती रहती है। इससे ईमानदारी से काम करने वाले कर्मचारियों का मनोबल बढ़ता है। केंद्र सरकार ने 129 नॉन परफॉर्मिंग कर्मचारियों को अनिवार्य रिटायरमेंट पिछले एक साल में दिया है। इसमें कुछ आईएएस और आईपीएस भी शामिल थे। कानून के मुताबिक, एक सरकारी कर्मचारी का प्रदर्शन दो बार रिव्यू होता है। एक बार जब उसे नौकरी के 15 साल हो जाएं और दूसरा 25 साल की सर्विस के बाद। हालिया आंकड़ों के मुताबिक देश में कुल 48.85 लाख केंद्रीय कर्मचारी हैं।

जरूरतमंदों को ही मिलेगा कर्जमाफी का फायदा: फडणवीस

मुंबई। कर्जमाफी की घोषणा के बाद महाराष्ट्र सरकार यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रही है कि इसका लाभ सिर्फ जरूरतमंद किसानों को ही मिल सके। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि राज्य सरकार डिजिटल प्लेटफॉर्म की मदद से यह सुनिश्चित करेगी कि उसकी कर्ज माफी योजना का फायदा केवल जरूरतमंद किसानों को ही मिले। फडणवीस ने कहा कि यह फैसला उस बड़े घोटाले के मद्देनजर लिया गया है जो वर्ष 2008 में केंद्र सरकार की तत्कालीन यूपीए सरकार द्वारा कर्जमाफी के बाद महाराष्ट्र में हुआ था। उन्होंने कहा कि इसका लाभ मुश्किलों में घिरे किसानों को नहीं मिल सका था।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने संयुक्त समिति का गठन किया है जो हफ्ते भर के भीतर उन परिस्थितियों के बारे में विचार-विमर्श करेगी जिनके जरिए यह सुनिश्चित हो सकेगा कि इस कर्ज माफी का लाभ किन्हें मिलना चाहिए। फडणवीस ने कहा कि जिन किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी है, जो पेशेवर हैं या सरकारी कर्मचारी हैं और खेती भी कर रहे हैं, उन्हें इस योजना से बाहर रखा जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि कर्जमाफी की घोषणा से अब कर्ज तले दबे राज्य पर और दबाव पड़ेगा क्योंकि इसकी खातिर उनकी सरकार को 25,000 करोड़ रुपये या इससे अधिक राशि की जरूरत होगी। यहां बीजेपी के गुड गवर्नेंस विभाग में हाल में आयोजित चर्चा में उन्होंने कहा, हालांकि, इसका प्रबंध हो जाएगा।' उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र सरकार ने 11 जून को कर्जमाफी की घोषणा की थी।

सरकार की दो टूक

हर हाल में एक जुलाई से जीएसटी

एजेंसी, नई दिल्ली

दिग्गज उद्योग संगठन एसोचैम की गुड्स ऐंड सर्विस टैक्स (जीएसटी) को जुलाई से लागू नहीं करने की मांग के एक दिन बाद सरकार ने स्पष्ट किया कि जीएसटी अपने तय समय एक जुलाई से ही लागू होगा। वित्त मंत्री अरुण जेटली ने रविवार को कहा कि हमारे पास जीएसटी को टालने का समय नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जीएसटी परिषद ने फैसला किया है कि यह 1 जुलाई से ही लागू होगा।

जेटली ने कहा कि जीएसटी को 30 जून और 1 जुलाई की मध्य रात्रि को दिल्ली में एक समारोह में आधिकारिक तौर पर लॉन्च किया जाएगा। जीएसटी परिषद ने सरकारी लॉटरी पर 12 प्रतिशत कर निर्धारित किया है जबकि सरकार अधिकृत निजी लॉटरी पर 18 प्रतिशत कर लगेगा। परिषद ने मुनाफाखोरी निरोधक, ई-वे विधेयक विधेयक नियमावली को भी मंजूरी दी। उन्होंने कहा कि जीएसटी परिषद की अगली बैठक 30 जून को होगी।

वित्त मंत्री ने कहा कि जीएसटी परिषद की बैठक में आईटी तैयारी पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि 65.6 लाख इकाइयों ने जीएसटी के लिए अस्थायी पंजीकरण कराया है। जेटली ने कहा कि ई-वे विधेयक पर आगे विचार-विमर्श किया जाएगा, तबतक वैकल्पिक नियम काम करेगा। इससे पहले शनिवार को उद्योग संगठन एसोचैम ने दो टूक कहा कि नई कर प्रणाली के लिए अभी होमवर्क पूरा नहीं हुआ है। एसोचैम ने केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली को एक लेटर लिखकर जीएसटी के क्रियान्वयन को टालने का अनुरोध किया है। इस लेटर में एसोचैम ने लिखा है कि आईटी नेटवर्क के तैयार न होने की वजह से करदाताओं को जीएसटी से जुड़ने में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

इस बीच विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि सरकार और कंपनियों को तेजी से जटिल हो रहे साइबर हमलों से निबटने के लिए अपनी कंप्यूटर नेटवर्क प्रणालियों के लिए सुरक्षा के पुख्ता उपाय करना चाहिए। आजादी के बाद देश का सबसे बड़ा कर सुधार बताया जा रहा वस्तु एंव सेवा कर एक जुलाई से लागू होगा। विशेषज्ञों ने आगाह किया है कि यदि सरकार और निजी कंपनियां जीएसटी पर संभावित साइबर हमले से निबटने के लिए अपने को उपयुक्त ढंग से तैयार नहीं किया जो सुरक्षा उल्लंघन की घटनाएं बढ़ सकती हैं।

पीडब्ल्यूसी इंडिया पार्टनर और लीडर (साइबर सुरक्षा) शिवरामा कृष्णन ने कहा कि नई कर व्यवस्था से कंपनियों पर कई खतरे हैं। डेटा लीक, मास्टर डेटा में अनधिकृत बदलाव और तीसरे पक्ष की संलिप्तता जैसे खतरे बढ़ सकते हैं। ऐसे में कंपनियों को जीएसटी पर ध्यान देते हुए अपनी आईटी संरचना संशोधित करनी होगी।

किफायत | **निगम प्रबंधन का फरमान, 23 डिग्री से नीचे न चले एसी**

अब एमपी टूरिज्म को भी लगने लगा करंट

संतोष चौधरी, भोपाल

मध्यप्रदेश का एमपी टूरिज्म अजब है गजब है। मप्र में 'दिल है बच्चा सा' को देखने आने वाले देशी-विदेशी सैलानियों को पूरे गरमी के सीजन में निगम की थ्री स्टार सहित अन्य होटलों में गरमी से राहत नहीं मिली। जब प्रदेश में तापमान 45 डिग्री तक पहुंच गया था, तब निगम प्रबंधन ने अपने स्टाफ को किसी भी सूरत में एयर कंडीशनर (एसी) का तापमान 23 डिग्री से नीचे नहीं करने का फरमान दे रखा था। जिसके चलते पर्यटकों को निगम की होटलों में 23 डिग्री से कम ठंडक नहीं मिली। कई होटलों ने इसका पालन तो किया, लेकिन सैलानियों से उनकी नोकझोंक भी हुई। हालांकि कई होटलों ने इसका पालन इसलिए भी नहीं किया कि पर्यटक नाराज न हो जाएं।

दरअसल, आम आदमी के साथ-साथ सरकारी विभागों और उनके उपक्रम भारी-भरकम बिजली बिलों से परेशान हैं। मप्र राज्य पर्यटन विकास निगम की होटलों में आ रहे बिजली के बिलों ने हिसाब-किताब बिगाड़ दिया है। असल में नोटबंदी के बाद मप्र के पर्यटकों में कमी आई है। वहीं, महंगाई बढ़ने के साथ होटलों के खर्चों में वृद्धि हुई है। बिजली कंपनी से कोई शिकायत करने से पहले निगम ने अपनी हॉटलों में बिजली बचाने की कवायद शुरू की है। इसी कवायद के चलते प्रबंध संचालक ने अपनी होटलों और यूनिट्स के प्रबंधकों को बिजली की खपत और खर्चे कम करने के लिए 20 बिंदुओं की एक गाइड लाइन जारी की है। निगम प्रबंधन का दावा है कि इस गाइड लाइन के बाद कई होटल्स के बिजली की खपत और खर्चे भी कम हुए हैं। उनका कहना है कि हमने इस बात का भी ध्यान रखा है कि पर्यटकों को किसी तरह की परेशानी न हो।

बिजली की खपत और खर्चे कम करने गाइड लाइन

ऐसे कम होगी खपत और खर्चे

- सीएफएल लैम्पस को एलईडी में बदला जाएं। यह सभी एलईडी फिलिप्स, हैवल्स, क्राम्पटन, बजाज और विप्रो आदि से खरीदने के कहा गया है।
- एसी, गीजर, फैन, हीट ब्लोअर, टीवी, फ्रिज, माइक्रोवेव, हेयर ड्रायर, टी केटल, डीप फ्रीजर जैसे उपकरण थ्री या फाइव स्टार लगाया जाएं।
- एसी का तापमान 23 सेंटीग्रेड से कम नहीं रखने के लिए गया है। कई होटल्स ने इसका पालन तो किया वजह ये है कि भारी भरकम बिजली बिलों का बड़ा कारण एयर कंडीशनर हैं।
- बिजली के 10 साल पुराने उपकरण को आधुनिक उपकरणों में बदला जाएं।
- बिजली उपकरणों की लगातार सर्विसिंग की जाएं।
- शादी समारोह के दौरान बाहर से किराए पर जनरेटर रखे जाएं। समारोह का बिजली खर्च नियमित बिल में जुड़ने पर पैनाल्टी लगती है।
- बिजली की बचत करने के लिए हर स्तर पर इंतजाम किया जाएं।

देश-विदेश 10 — अमरीका में रह रहे तीन लाख भारतीयों पर संकट के बादल

न्यूजफ्लैश — अच्छी बारिश के लिए यहां हर साल होती है 'टोटका रैली' 3

अल्पसंख्यकों की मदद के लिए टोल फ्री नंबर होगा — विविध 12